पाठ-8

भारत में राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन बुनियादी तौर पर विदेशी आधिपत्य की चुनौती के जवाब के रूप में उदित हुआ। स्वयं ब्रिटिश शासन की परिस्थितियों ने भारतीय जनता में राष्ट्रीय भावना विकसित करने में सहायता दी।

राष्ट्रीय भावना के विकास के कारण

भारत की राजनीतिक एकता

अंग्रेजी शासन में एक सी अधीनता, एक सी समस्याएँ, एक से कानूनों ने भारत को एक से साँचे में ढालना आरम्भ कर दिया। साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा देश में साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीय तथा भाषाई विरोध के बीज बोने के बावजूद, अखिल भारतीय भावना पनपी। इसने वैचारिक एवं भावात्मक एकता को बढ़ावा दिया।

तीव्र परिवहन

वास्तव में प्रशासनिक सुविधाएँ, सैनिक रक्षा के उद्देश्य, आर्थिक व्यापार तथा व्यापारिक शोषण की बातों को ध्यान में रखते हुए ही परिवहन के तीव्र साधनों की योजनाएँ बनीं। पक्के मार्गों का एक जाल बिछ गया। इससे प्रान्त एक दूसरे से तथा गाँव बड़े-बड़े नगरों से जुड़ गए। देश को एकता में बाँधने वाला सबसे बड़ा साधन रेल थी।

डाक तथा संचार व्यवस्था

1850 के उपरान्त आरम्भ हुई आधुनिक डाक व्यवस्था तथा बिजली के तार ने देश को एक करने में सहायता की।

अन्तर्देशीय पत्रों, समाचार पत्रों तथा पार्सलों को कम दर में भेजने की व्यवस्था ने देश के सामाजिक, शैक्षणिक, बौद्धिक तथा राजनीतिक जीवन में एक परिवर्तन ला दिया। डाकखानों के द्वारा राष्ट्रीय साहित्य पूरे देश में भेजा जा सकता था। सन्देशों के

शीघ्रातिशीघ्र भेजने में बिजली के तारों ने क्रांति ला दी। आधुनिक संचार साधनों से भारत के भिन्न-भिन्न भागों में रहने वाले लोगों को एक दूसरे से सम्बन्ध बनाए रखने में सहायता मिली जिससे राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।

नए बुद्धिजीवी वर्ग

नए बुद्धिजीवी लोग प्रायः कनिष्ठ प्रशासक, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, इत्यादि थे। इनमें से कुछ लोग इंग्लैण्ड में भी शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने वहाँ इन राजनीतिक संस्थाओं की व्यवस्था भी देखी थी। यहाँ लौटने पर उन्हें यह अनुभव हुआ कि उनके मौलिक अधिकार शून्य के बराबर हैं और वातावरण में दासता ही दासता है।

अंग्रेजी पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी वर्ग अपने राजनीतिक अधिकारों से परिचित थे। उन्होंने अनुभव किया कि सन् 1833 के चार्टर एक्ट तथा रानी विक्टोरिया की सन् 1858 में की गई घोषणा में दिए गए वचनों के बावजूद ऊँचे-ऊँचे पदों के द्वार भारतीयों के लिए बन्द ही थे। यही लोग, नवोदित राजनीतिक असन्तोष का केन्द्र बिन्दु बने तथा भारतीय राजनीतिक संस्थाओं को नेतृत्व प्रदान किया।

अंग्रेजी भाषा

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय बोलियों का प्रचलन है। विभिन्न भाषा-भाषायी क्षेत्रों के मध्य अंग्रेजी ने एक सम्पर्क भाषा की भूमिका का निर्वाहन किया जिससे कश्मीर से दक्षिणी धुरव तक सभी क्षेत्रों के निवासी अपनी बात एक मंच पर रख सकें।

प्रेस तथा साहित्य की भूमिका

प्रेस द्वारा भारतीयों ने देश-भक्ति की भावनाओं का, आधुनिक आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक विचारों का प्रचार किया तथा एक अखिल भारतीय चेतना जगाई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बड़ी संख्या में राष्ट्रवादी समाचारपत्र निकले। उनके पन्नों पर सरकारी नीतियों की लगातार आलोचना होती थी, भारतीय दृष्टिकोण को सामने रखा जाता था, लोगों को एकजुट होकर राष्ट्रीय कल्याण के काम करने को कहा जाता था, तथा जनता के बीच स्वशासन, जनतंत्र, औद्योगीकरण आदि के विचारों को लोकप्रिय बनाया जाता था।

अंग्रेज शासकों का नस्लीय दंभ

भारत में राष्ट्रीय भावनाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण अंग्रेजों की जातीय श्रेष्ठता का दंभ था। भारतीय यूरोपीय लोगों के क्लबों में नहीं जा सकते थे और उन्हें गाड़ी के उस डिब्बे में यात्रा की अनुमति नहीं थी जिसमें यूरोपीय यात्री जा रहे हों।

आर्थिक शोषण

अंग्रेजों की पक्षपातपूर्ण आर्थिक तथा राजस्व नीति की प्रतिक्रिया के रूप में आर्थिक राष्ट्रवाद का उदय हुआ। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इंग्लैण्ड औद्योगिक क्रान्ति का नेता था और उसे अपने सस्ते कच्चे माल तथा तैयार माल के लिए एक मण्डी चाहिए थी।

भारत की सभी आर्थिक नीतियाँ- कृषि, उद्योग, वित्त, शुल्क, विदेशी पूँजी निवेशन, विदेशी व्यापार, बैंक व्यवसाय इत्यादि- अंग्रेजी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने के लिए गठित की गईं। जब कभी भी भारतीय विकास तथा अंग्रेजी हितों में टकराव होता था, तो बलि सदैव भारतीय हितों की होती थी। इस व्यवस्था का दादाभाई नौरोजी ने ड्रेन ऑफ वेल्थ नामक पुस्तक में उल्लेख किया है।

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना

1885 से भारत के इतिहास में एक नया युग आरम्भ हुआ। उस वर्ष भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नाम से एक अखिल भारतीय राजनीतिक संस्था का जन्म हुआ। इस राष्ट्रीय कांग्रेस की निम्न मुख्य अवस्थाएँ दृष्टिगोचर होती हैं-

- 1885-1919 के पहले चरण में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ध्येय अस्पष्ट तथा संदिग्ध थे। यह आन्दोलन केवल शिक्षित मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग तक ही सीमित था, जो पाश्चात्य उदारवादी और अतिवादी विचारधारा से प्रेरणा लेता था।

- 1919-1947 के अग्रिम चरण में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए महात्मा गाँधी के नेतृत्व में एक विशेष भारतीय ढंग- अहिंसात्मक असहयोग, अपनाकर आन्दोलन किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में अग्रणी भूमिका श्री एलेन ओक्टेवियन ह्यूम (ए0ओ0 ह्यूम) नामक अवकाश प्राप्त अधिकारी की रही। वे उदारवादी अंग्रेज थे। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले प्रमुख भारतीय नेता दादाभाई नौरोजी, काशीनाथ, फीरोजशाह मेहता, एस0 सुब्रह्मण्य अय्यर, पी0 आनन्द गोपाल गणेश आगरकर और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे। उमेशचन्द्र बनर्जी इस अधिवेशन के अध्यक्ष थे।

ए.ओ. ह्यूम

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में घोषित उद्देश्य

कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन, मुम्बई (1885)

1.देश के विभिन्न भागों के राजनीतिक व सामाजिक नेताओं को एकजुट करना।
2.भारतीयों में राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना।
3.राजनीतिक और सार्वजनिक प्रश्नों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त करना।

कांग्रेस के अधिवेशन में देश के हर वर्ग के लोगों की समस्याओं पर चर्चा होती थी। सरकारी नीतियों की आलोचना भी होती थी। सरकार को कैसी नीतियाँ अपनानी चाहिए- इसके बारे में प्रस्ताव पास किए जाते थे।

कांग्रेस की दो विचारधाराएँ

नरम दल-

कांग्रेस के वे नेता जो शान्तिपूर्ण तथा वैधानिक ढंग से देश की आवश्यकताओं को पूरा कराना चाहते थे, उदारवादी कहलाये। उनका विश्वास था कि अगर जनमत को उभारा जाए और प्रार्थना पत्रों, सभाओं, प्रस्तावों तथा भाषणों के द्वारा जनता की माँग को शासन तक पहुँचाया जाए तो वे धीरे-धीरे एक-एक करके हमारी माँगों को पूरा कर देंगे। ऐसे नेताओं में दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय, सच्चिदानन्द सिन्हा आदि प्रमुख थे।

गरम दल-

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम वर्षों में ंराष्ट्रीय आन्दोलन में एक नयी विचारधारा का उदय हुआ।

बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चन्द्र पाल गरम विचार धारा के थे। उनका मानना था कि अंग्रेज सरकार से केवल अनुनय-विनय करके भारतीय अपने अधिकारों को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। इनकी मान्यता

थी कि वे उग्र विरोध के बिना हमारी माँगें पूरी नहीं करेंगे। लोकमान्य तिलक ने ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है इसे हम लेकर रहेंगे'' का नारा देकर जनता में देश-प्रेम की भावना भर दी। बंकिमचन्द्र चटर्जी के गीत 'वन्दे मातरम्' ने भारतवासियों में मातृभूमि के प्रति देश-प्रेम की भावना जगाई।

नरम दल व गरम दल की भावनाओं, विचारों और तरीकों में आपको क्या अन्तर दिखाई देते हैं ?

बंग-भंग आन्दोलन

तेजी से बढ़ते राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव को कम करने के लिये तत्कालीन गवर्नर-जनरल लार्ड कर्जन ने बंगाल को 1905 ई0 में दो भागों में विभाजित कर दिया। अंग्रेजों ने विभाजन का कारण बढ़िया प्रशासन व्यवस्था प्रदान करना बताया, परन्तु वास्तविक कारण हिन्दू व मुसलमान लोगों में फूट डालना था। इसी बीच 1906 में भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना की तथा हिन्दुओं ने भी 1906 ई0 में हिन्दू महासभा का गठन करके बंगाल प्रेसीडेन्सी (प्रांत) को दो हिस्सों में बाँट दिया - एक पश्चिमी बंगाल जिसमें हिन्दू अधिक थे और दूसरा पूर्वी बंगाल जिसमें मुसलमान अधिक थे। विभाजन के कारण सारे बंगाल में रोष की लहर दौड़ गई। विभिन्न स्थानों पर सभाएँ व आन्दोलन किये गये। नरम दल और गरम दल के नेताओं ने मिलकर इस आन्दोलन को नेतृत्व दिया।

cfg"dkj vkSj Lons'kh vkUnksyu

बहिष्कार और स्वदेशी आन्दोलन

बंग-भंग का विरोध करने के लिए भारतीयों ने अंग्रेजों से प्रार्थना करने की बजाए अपने बल पर स्वराज्य हासिल करने की भावना से दो तरह के कार्यक्रम बनाए-

1.बड़ी मात्रा में अंग्रेजी कपड़े, शक्कर आदि माल का बहिष्कार।

2.दूसरा, स्वदेशी यानी अपने देश के लोगों द्वारा बनाई चीजों का ही उपयोग। भारतीयों में स्वदेशी का विचार पनपने लगा। वे कहते, ''हम अपने उद्योग लगाएंगे, अपने स्कूल, कालेज खोलेंगे, गाँव के लोगों के बीच काम करके उनकी समस्याएँ दूर करेंगे। हम अपनी-अपनी पंचायत व कचेहरी चलाएँगे। हम अपने विकास के लिए अंग्रेजों पर निर्भर नहीं रहेंगे और अपनी आत्मशक्ति बढ़ाएंगे।

लोग यह क्यों सोचते थे कि बहिष्कार और स्वदेशी कार्यक्रमों से देश को स्वराज्य मिल पाएगा- चर्चा कीजिए।

लार्ड कर्जन

क्रान्तिकारी आन्दोलन

ब्रिटिश शासन द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रूर दमन के कारण कुछ देशभक्तों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये सशस्त्र क्रान्ति का मार्ग अपनाया। क्रान्तिकारी शीघ्र परिणाम के इच्छुक थे। बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन ने गति प्राप्त कर ली। इनका विश्वास था कि क्रान्ति से ही देश को आजाद कराया जा सकता है। क्रान्तिकारियों ने बंगाल में 'अनुशीलन समिति' की स्थापना की। खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी और अरविन्द घोष प्रमुख क्रान्तिकारी थे। महाराष्ट्र के चापेकर भाइयों की भी इस प्रकार के आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए क्रान्तिकारी समाचार पत्रों का प्रकाशन भी शुरू किया गया। बंगाल के 'संध्या' और 'युगान्तर' तथा महाराष्ट्र का 'काल' प्रमुख समाचार पत्र थे।

मार्ले-मिण्टो सुधार (1909)

1909 ई0 में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को सन्तुष्ट करने के लिए नए सुधारों की घोषणा की। भारत में काउंसिल के सदस्यों की संख्या 16 से बढ़ाकर 60 कर दी गई। मुसलमानों के लिए सीट आरक्षित करके उनका पृथक निर्वाचन करने की व्यवस्था की गई, किन्तु इससे भारतीयों में असन्तोष कम नहीं हुआ।

सन् 1911 में ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम जब दिल्ली आये तब उन्होंने 'बंग भंग' को रद्द कर पुनः बंगाल को एक करके कोलकाता के स्थान पर दिल्ली को यहाँ की राजधानी भी बना दिया। लेकिन इससे भी राष्ट्रवादी संतुष्ट नहीं हुए।

अरविन्द घोष

गदर पार्टी

युद्ध काल में बंगाल, महाराष्ट्र तथा उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में सशस्त्र राष्ट्रवादी विद्रोह की योजना तैयार होने लगी। भारत के बाहर अमरीका और कनाडा में बसे भारतीय देशभक्तों ने 1913 ई0 में गदरपार्टी की स्थापना की। इस पार्टी के प्रमुख नेता लाला हरदयाल थे। इस दल के अन्य प्रमुख सदस्यों में रास बिहारी बोस, राजा महेन्द्र प्रताप, बरकत उल्लाह, उबैद उल्लाह सिन्धी, भगवान सिंह तथा सोहना सिंह भरवना अधिक सक्रिय थे। गदर पार्टी की ओर से एक सामाजिक पत्र 'गदर' नाम से प्रकाशित होता था। उसके मुख पृष्ठ पर लिखा रहता था 'अंग्रेजी राज का दुश्मन'।

रासबिहारी बोस

होमरुल आन्दोलन

सन् 1914 ई0 में प्रथम विश्व युद्ध आरम्भ हो गया। इंग्लैण्ड ने युद्ध में लड़ने के लिये भारतीय जनता और भारतीय साधनों का पूर्ण उपयोग किया। भारतीयों को बहुत बड़ी संख्या में सेना में भर्ती किया गया। ब्रिटिश सरकार ने करोड़ों

रुपये भारत से ले जाकर युद्ध में खर्च किये। युद्धकाल में भारत के कुछ राष्ट्रीय नेता इंग्लैण्ड की मदद करने के पक्ष में थे। वे आशा करते थे कि इस मदद के बदले में इंग्लैण्ड की सरकार भारत को स्वशासन की दिशा में कुछ सुविधाएँ घोषित करेगी। कुछ भारतीय नेता युद्ध के दौरान इंग्लैण्ड पर दबाव डालना चाहते थे जिससे स्वशासन के विषय में जल्दी घोषणा कर दी जाय। ब्रिटिश सरकार ने युद्ध बन्द होने के बाद कांग्रेस की माँगों को पूरा करने का आश्वासन दिया था। इसी आधार पर भारतीयों ने विश्व युद्ध में ब्रिटिश सरकार की सहायता भी की थी। किन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद अंग्रेज अपने वादे से मुकर गए।

लाला हरदयाल

1916 ई0 आते-आते कांग्रेस के दोनों नरम एवं गरम दलों और दूसरी ओर कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग में समझौता हो गया। इसी समय श्रीमती एनी बेसेन्ट एवं लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने 'होमरुल आन्दोलन' प्रारम्भ किया।

और भी जानिए

- सन् 1895 और 1905 में एक छोटे एशियाई देश, जापान ने बड़े देश चीन और पश्चिमी देश रूस को युद्ध में हराया था। इन देशों की हार ने यह बता दिया कि सिर्फ बड़े देशों तथा पश्चिमी देशों का शक्ति में एकाधिकार नहीं है। उनकी इस हार ने गरम दल की सोच को काफी प्रभावित किया।
- सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ। इसमें इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, रूस और जापान देश थे। अमरीका भी बाद में इंग्लैण्ड और उसके पक्ष वाले देशों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया।

कठिन शब्दावली

अधिपत्य-किसी के द्वारा किया जाने वाला शासन।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन हुआ-

(क) 1885 में (ख) 1880 में

(ग) 1886 में (घ) 1890 में

(2) 'वंदे मातरम्' गीत के रचयिता-

(क) बाल गंगाधर तिलक (ख) बंकिमचन्द्र चटर्जी

(ग) लाला लाजपत राय (घ) गोपाल कृष्ण गोखले

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न

(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में अग्रणी भूमिका किस अधिकारी की रही ?

(2) ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है इसे हम लेकर रहेंगे।'' किसका कथन है?

(3) भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना किस सन् में हुई।

3. लघु उŸारीय प्रश्न

(1) कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में घोषित किए गए उद्देश्य लिखिए ?

(2) कांगे्रस की दो विचारधाराएं कौन सी थीं ? उनके बारे में लिखिए ?

(3) होमरूल आंदोलन से आप क्या समझते हैं ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब और क्यों हुई ? स्पष्ट करिए।

प्रोजेक्ट वर्क

1. कांग्रेस के नरम एवं गरम दल के नेताओं की सूची बनाइए। इनमें से आप किस दल के नेताओं के विचारों से सहमत हैं ? और क्यों ?

पाठ-9

स्वाधीनता आन्दोलन स्वतंत्रता प्राप्ति एवं विभाजन

इन दिनों महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रीका में थे। वहाँ भी अंग्रेज, गैर-अंग्रेजों से भेदभाव बरतते थे।

गाँधीजी को भी उनके इस भेदभाव को सहना पड़ा, जब वह रेलगाड़ी के उस डिब्बे में बैठे जिसमें सिर्फ अंग्रेज बैठ सकते थे। गाँधी जी के पास इस डिब्बे में बैठने का टिकट था फिर भी उन्हें गाड़ी से उतार दिया गया इसलिए क्योंकि वह श्वेत नहीं थे।

वहाँ भारतीयों के साथ रंगभेदी सरकार के दुर्व्यवहार को देखकर महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया। अन्त में अंग्रेजी सरकार को झुकना पड़ा था। सन् 1915 ई0 में महात्मा गाँधी भारत लौट आए।

गाँधी जी का नेतृत्व (1919-1935)

प्रथम विश्वयुद्ध के समय महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीयों ने अंग्रेजों की बहुत सहायता की।

गाँधी जी ने सोचा कि इस युद्ध की समाप्ति पर अंग्रेज देश को आजाद कर देंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस और क्रान्तिकारियों की बढ़ती हुई शक्ति का दमन करने के लिए मार्च, 1919 ई. में रोलेट एक्ट पास कर दिया, जिसके अन्तर्गत सरकार किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमे के कैद कर सकती थी। गाँधी जी ने फरवरी 1919 ई. में इसके विरोध में सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया।

अहिंसा और सत्याग्रह

स्वराज्य के लिए अंग्रेजों की हत्या करने का रास्ता सबको उचित नहीं लगता था। हिंसा व हत्या का विरोध करने वालों में गाँधी जी प्रमुख थे। उनका मानना था

कि अगर हमारी बात सत्य है तो बिना जोर-जबरदस्ती व हिंसा के उसे प्राप्त करना चाहिए। अतः हमें सत्य के लिए सिर्फ आग्रह करना चाहिए यानी सत्याग्रह। सत्य को हिंसा से प्राप्त करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

गाँधीजी ने सत्याग्रह करने के लिए ये कार्यक्रम बनाए-

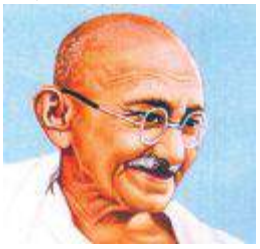

महात्मा गांधी

- अन्याय करने वाले का सहयोग न करना यानी असहयोग करना।
- अनुचित लग रही बातों को मानने से इनकार कर देना यानी अवज्ञा करना।

गाँधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अंग्रेज शासन से असहयोग और अवज्ञा का तरीका जोड़ा।

जब गाँधी जी राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुए तो उस आन्दोलन में एक नया मोड़ आया। गाँधी जी लोगों की छोटी-छोटी व ठोस दिक्कतों को हल करने के लिए आन्दोलन छेड़ते थे। वह अंग्रेज सरकार से माँग करते थे कि लगान कम करें, नमक पर कर हटाएँ, जंगल के उपयोग पर पाबंदी हटाएँ, शराब की बिक्री बंद करें (शराब की बिक्री से सरकार को बहुत आय मिलती थी)। गाँधी जी के नेतृत्व में हजारों की संख्या में लोग अपनी इन ठोस समस्याओं से लड़ने के लिए आन्दोलन की राह पर निकलने लगे। इसके पहले के किसी भी प्रयास से भारी संख्या में आम लोग राष्ट्रीय आन्दोलन में नहीं उतरे थे।

गाँधीजी ने ही देश भर में छुआछूत मिटाने का अभियान भी शुरू किया ताकि लोग नया राष्ट्र बनाने के आन्दोलन में शामिल हो सकें।

एक बार गाँधीजी, दक्षिण अफ्रीका में रेलयात्रा कर रहे थे। वे उस डिब्बे में बैठ गए जो गोरे लोगों के लिए आरक्षित था उन्हें एक गोरे ने डिब्बे से बाहर धकेल दिया और कहा कि ‘‘एक काला भारतीय, उनके डिब्बे में यात्रा कैसे कर सकता है।’’ यह उनका सरासर अपमान था। उन्होंने महसूस किया कि गोरे लोगों में उनके आत्म सम्मान और गरिमा के प्रति बिल्कुल आदर नहीं था इसलिए उन्होंने गाँधी जी को डिब्बे से बाहर धकेल दिया। इस कटु अनुभव ने गाँधी जी को भारतीयों की गरिमा के उत्थान और अन्याय से लड़ने की प्रेरणा दी।

उन्हांने महसूस किया कि भारत में भी लोग आपस में ही जाति-मजहब, ऊँच-नीच, सवर्ण-दलित, भाषा सम्प्रदाय के नाम पर विभिन्न समूहों में बटे हुए हैं। इसलिए ये गोरे अंग्रेज हमारे देश पर शासन कर रहे हैं। उन्होंने भारत में सर्वप्रथम सभी धर्मों एवं सम्प्रदाओं के लोगों को राष्ट्रवाद एवं भाई-चारे की लड़ी में पिरोकर अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ दी गाँधीजी के इसी प्रयास के बदौलत ही आज हमारा यह देश भारत आजाद हो सका है।

जलियाँवाला काँड 1919

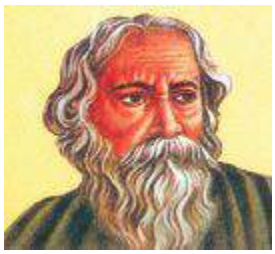

रवीन्द्र नाथ टैगोर

इसी समय अमृतसर में 13 अप्रैल, 1919 ई. को एक भयानक हत्याकाण्ड हुआ। पंजाब के नेता डॉ0 सत्यपाल और डॉ0 सैफउद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन हुआ। सभा के मध्य में ही पंजाब के सैनिक कमाण्डर जनरल डायर ने सैनिकों को लेकर बाग को घेर लिया। बिना चेतावनी दिए हुए उसने निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। इससे कई सौ निर्दोष लोगों की मृत्यु हो गयी और हजारों लोग घायल हुए।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड से समस्त देश में हाहाकार मच गया। इसके विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी ’’सर‘‘ की उपाधि वापस कर दी। इसने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के राष्ट्रवाद को जन-राष्ट्रवाद के रूप में परिवर्तित कर

दिया, जिसमें किसान, मजदूर, छात्र, दस्तकार, कारीगर आदि सम्मिलित हुए। अब राष्ट्रीय आन्दोलन पहले की अपेक्षा अधिक दृढ़ हो गया। इसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता का अभूतपूर्व प्रदर्शन हुआ, जिससे भारतीय राष्ट्रवाद को काफी बल मिला।

असहयोग आन्दोलन 1920-1922

ऐसी विकट स्थिति में गाँधीजी ने देश भर में असहयोग आन्दोलन शुरू किया। 1857 के विद्रोह के बाद पूरे देश में एक साथ अंग्रेजी हुकूमत के विरोध में होने वाला यह पहला बड़ा आन्दोलन था। इसका उद्देश्य था, अन्यायी अंग्रेज शासन का सहयोग न करना।

आइए इस आन्दोलन के दौरान घटित होने वाली कुछ गतिविधियों की झलकियाँ देखें-

1."अंग्रेजों को भारत में सरकार चलानी है तो खुद चलाएँ। हम क्यों उनका शासन संभालें ?" यह कहते हुए कई लोगों ने सरकारी पदों से इस्तीफा दे दिया।

2.अनेकों छात्रों ने सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए और स्वदेशी स्कूलों में भर्ती होने लगे।

3.अंग्रेजी कपड़े व शराब की दुकानों पर धरने दिये गये। अंग्रेजी चीजों के बहिष्कार के साथ-साथ स्वदेशी चीजों को बढ़ावा देने की कोशिश भी हुई।

4.देश भर में कई वकीलों ने कचहरी में वकालत छोड़ दी।

5.कई जगह परिषद् के चुनावों में लोगों ने वोट नहीं डाले

अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करते भारतीय

6.गाँधीजी ने लोगों द्वारा चरखा चलाने व सूत कातने का अभियान जोड़ दिया। इससे घर-घर में देश को आत्म-निर्भर बनाने की भावना मजबूत बनी।

7.छोटे-बड़े शहरों में सैकड़ों लोगों के जत्थे जुलूस में निकलते और पुलिस के आगे गिरफ्तारी देते। पुलिस उन्हें रोकती, उन पर लाठियाँ बरसाती, पर लोग पुलिस पर हाथ भी न उठाते। एक जत्था पिटते हुए गिरफ्तार हो जाता तो उसके

पीछे दूसरा जत्था 'इंकलाब जिन्दाबाद', 'चरखा चला-चला के हम स्वराज्य लेंगे' और 'महात्मा गाँधी की जय' के नारे लगाते हुए आता और शान्तिपूर्वक गिरफ्तारी देता। अंग्रेज शासन की हिंसा का मुकाबला लोग शान्ति और दृढ़ता से सत्य के लिए आग्रह करके करते।

8.1921 में इंग्लैण्ड का राजकुमार भारत की यात्रा पर आया तो उसका बहिष्कार किया गया- लोग उसके स्वागत में नहीं गए और मुम्बई (बम्बई) शहर में उस दिन हड़ताल रही।

दूर-दराज के इलाकों में, गाँव-गाँव में गाँधीजी की खबर फैल गई। किसानों, आदिवासियों, मजदूरों में भी यह जोश भर गया कि अब चंद दिनों में अंग्रेज राज्य खत्म हो जाएगा और "गाँधीजी का स्वराज्य" का स्वप्न पूरा हो जाएगा।

इस तरह देश भर में उथल-पुथल मच गई और लोगों में अन्याय व अत्याचार के खिलाफ अपने अधिकारों के लिए लड़ने की जबरदस्त भावना उमड़ पड़ी।

चौरी-चौरा काण्ड

इसी समय उत्तर प्रदेश में चौरी-चौरा नामक स्थान के किसान थाने पर अपने विरोध प्रदर्शन के लिए आए थे क्योंकि पुलिस ने उनके एक साथी को बहुत मारा था। जब वे थाने पर आए तो पुलिस ने उन पर भी गोली चलानी शुरू कर दी। गुस्से में आकर किसानों ने थाने में आग लगा दी।

इस घटना से गाँधी जी को काफी दुःख हुआ और 12 फरवरी 1922 को उन्होंने आन्दोलन वापस ले लिया। उनका मानना था कि हिंसा से स्वाधीनता प्राप्त नहीं की जा सकती। उनके अनुसार किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपनाये गये तरीके भी महत्वपूर्ण हैं। अब गाँधी जी ने रचनात्मक कार्य करने का निश्चय किया। इसमें हाथ से कताई-बुनाई, छुआ-छूत का निवारण एवं साम्प्रदायिक एकता की स्थापना आदि थे।

गाँधी जी ने चौरी-चौरा काण्ड के बाद असहयोग आन्दोलन वापस क्यों लिया ?

इस प्रकार जब असहयोग आन्दोलन ठण्डा पड़ गया तो अंग्रेज सरकार ने इस अवसर का लाभ उठाया। गाँधी जी 10 मार्च, 1922 ई0 को कैद कर लिये गये और उन्हें 6 वर्ष के लिए सजा दे दी गई। यद्यपि असहयोग आन्दोलन असफल रहा, लेकिन इसके कारण राष्ट्रवादी विचार पूरे देश में फैल गये।

सशस्त्र क्रान्तिकारियों का योगदान

राम प्रसाद बिस्मिल

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान क्रान्तिकारी आन्दोलनकारियों को बुरी तरह कुचल दिया गया। बहुत से नेता जेल भेज दिये गये और शेष इधर-उधर बिखर गये। 1920 ई0 के प्रारम्भ में क्रान्तिकारियों को जेल से रिहा कर दिया गया। इसके कुछ समय बाद ही कांग्रेस ने असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया। क्रान्तिकारी सशस्त्र क्रान्ति का रास्ता छोड़कर असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये, किन्तु असहयोग आन्दोलन को एकाएक वापस ले लेने से क्रान्तिकारियों की उम्मीदों पर पानी फिर गया। इन क्रान्तिकारियों ने पुनः अपना क्रान्तिकारी संगठन बनाना प्रारम्भ कर दिया। इसके नेता पुराने क्रान्तिकारी सचिन्द्र नाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल तथा योगेश चन्द्र चटर्जी थे।

भगत सिंह

अशफाक उल्ला खाँ

काकोरी काण्ड

अक्टूबर 1924 ई0 में क्रान्तिकारी युवकों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ और ''हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन'' का गठन किया गया। इसमें देश से अंग्रेजी सत्ता को जड़ से उखाड़ फेंकने तथा भारत को स्वतंत्र कराने का संकल्प लिया गया। संघर्ष छेड़ने के लिए धन का अभाव था। अतः इन क्रान्तिकारियों ने 9 अगस्त 1925 ई0 को लखनऊ के निकट काकोरी में एक रेलगाड़ी रोककर सरकारी खजाने को अपने अधिकार में ले लिया। बाद में वे पकड़े गये। इस लूटकाण्ड में पं0 रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी दी गयी। अन्य व्यक्तियों को आजीवन कारावास की सजा देकर अण्डमान भेज दिया गया और 17 लोगों को लम्बी सजाएँ सुनायी गयीं। चन्द्र शेखर आजाद फरार हो गये।

लाला लाजपत राय

लाहौर काण्ड

भगत सिंह और राजगुरु ने दिसम्बर 1928 ई0 को साइमन कमीशन का विरोध करते हुए लाला लाजपत राय को लाठी से चोट पहुँचाने वाले पुलिस व्यक्तियों का नेतृत्व करने वाले अंग्रेज उच्च अधिकारी साण्डर्स की हत्या कर दी। सरकारी नीतियों के विरोध में 8 अप्रैल 1929 ई0 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली की केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंका। बम से नुकसान नहीं हुआ। दोनों वहाँ से भागे नहीं और पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। भगत सिंह एवं उनके साथियों पर साण्डर्स हत्याकाण्ड से सम्बन्धित मुकदमा लाहौर में चलाया गया। 7 अक्टूबर 1930 ई0 को भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव को फाँसी की सजा सुनाई गयी।

चन्द्र शेखर आजाद

सुखदेव

लाहौर में उनको 23 मार्च 1931 ई0 को फाँसी दे दी गयी। यह मुकदमा "लाहौर काण्ड" के नाम से प्रसिद्ध है।

सत्ता के दमन ने धीरे-धीरे क्रान्तिकारी आन्दोलन को निर्बल कर दिया। 27 फरवरी, 1931 ई0 को इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में मुठभेड़ के दौरान चन्द्रशेखर आजाद शहीद हो गये। वर्तमान में एल्फ्रेड पार्क का नाम शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क है। आजाद की मृत्यु के बाद पंजाब, उत्तर प्रदेश और बिहार में क्रान्तिकारी आन्दोलन लगभग समाप्त सा हो गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन 1930-1932

साइमन कमीशन-

1928 में अंग्रेज सरकार ने भारत के शासन के नियम बनाने के लिए साइमन नामक व्यक्ति के नेतृत्व में एक समिति बैठाई। इस समिति में एक भी भारतीय न था। इससे बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज सरकार यह मानने को तैयार नहीं है कि भारत के लोगों को अपने देश का शासन चलाने का अधिकार होना चाहिए। इसलिए भारत में साइमन जहाँ-जहाँ गया वहाँ उसके विरोध में जुलूस व हड़तालें हुईं और "साइमन वापस जाओ" का नारा जोरों से गूँजा।

साइमन कमीशन में भारत का कोई भी
प्रतिनिधि नहीं था।

लाहौर अधिवेशन और पूर्ण स्वराज्य की माँग

1929 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में शुरू हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष पं0जवाहर लाल नेहरू चुने गए। ब्रिटिश सरकार को नेहरू रिपोर्ट स्वीकार करने के लिए 31 दिसम्बर, 1929 की समय सीमा समाप्त हो चुकी थी इसलिए राष्ट्रीय कांग्रेस ने रावी नदी के तट पर 31 दिसम्बर, 1929 की रात्रि 12 बजे तिरंगा झण्डा फहराया और पूर्ण स्वराज्य की माँग का प्रस्ताव पारित किया।

डाँडी यात्रा

1930 ई0 के कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में कांग्रेस को सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने का अधिकार दे दिया गया था। अतः गाँधी जी के नेतृत्व में स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। गाँधीजी ने 1930 ई0 में नमक कानून को तोड़कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आह्वान किया। 12 मार्च, 1930 ई0 को गाँधीजी ने साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियों के साथ डाँडी की ओर यात्रा प्रारम्भ की। गाँधी जी ने समुद्र के किनारे नमक बनाकर अंग्रेजों का कानून तोड़ दिया।

इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन में शीघ्र ही बहुत बड़ी संख्या में महिला एवं पुरुष स्वयं सेवकों ने भाग लिया। विदेशी माल का बहिष्कार किया गया। कहीं-कहीं किसानों ने लगान देना बन्द कर दिया। सरकार ने निर्मम दमन, निहत्थे स्त्री-पुरुषों पर लाठी और गोली की बौछार के द्वारा इस आन्दोलन को दबाने का प्रयास किया। 5 मई, 1930 ई0 को सरकार ने गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में मद्रास (चेन्नई), कलकत्ता (कोलकाता) और कराची आदि नगरों में प्रदर्शन हुए और प्रदर्शनकारियों की विशाल भीड़ और पुलिस के बीच टकराव हुए।

महात्मा गाँधी की डाँडी यात्रा

पेशावर में जनाक्रोश की अभिव्यक्ति कई रूपों में देखने को मिलती है। यहाँ कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी को लेकर जनता ने अभूतपूर्व प्रदर्शन किया। इस इलाके में सीमान्त

गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ वर्षों से सक्रिय थे। उनके द्वारा जनता में किये गये कार्यों के कारण अहिंसक क्रान्तिकारियों के वीर जत्थे अर्थात् खुदाई खिदमतगारों के दल तैयार हुए थे। ये लोग ''लालकुर्ती'' के नाम से जाने जाते थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में इनकी भूमिका काफी सक्रिय थी। इसी प्रकार देवबन्द शाखा की राजनीतिक संस्था जमाअत-उल-उल्मा-ए- हिन्द ने इस आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

खान अब्दुल गफ्फार खाँ

प्रथम गोलमेज सम्मेलन

इस बीच 1930 ई0 में ब्रिटिश सरकार ने लंदन में भारतीय नेताओं का पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया। इसका उद्देश्य साइमन कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करना था। कांग्रेस ने इस सम्मेलन का बहिष्कार किया।

गाँधी-इरविन समझौता एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन

प्रथम गोलमेज सम्मेलन, लंदन, सन् 1930

5 मार्च, 1931 ई0 को सरकार और कांग्रेस में एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता कहते है। गाँधीजी ने सितम्बर 1931 ई0 में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। उस सम्मेलन में गाँधीजी को कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। सम्मेलन से वापस लौटने पर गाँधीजी ने पुनः 1932 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया। सरकार ने गाँधीजी को बन्दी बना लिया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में दलितों के लिए अलग निर्वाचन की व्यवस्था की गयी थी। इससे गाँधीजी को

आघात लगा और उन्होंने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। अंततः डॉ0 अम्बेडकर और गाँधी जी के मध्य पूना में समझौता हुआ, जिसे ''पूना पैक्ट'' कहा जाता है। इसके अनुसार दलितों के लिए विधानमण्डलों में स्थान सुरक्षित कर दिये गये। पृथक निर्वाचन का निर्णय समाप्त कर दिया गया। 1934 ई0 में गाँधीजी ने अपना आन्दोलन बंद कर दिया और वह कांग्रेस से त्यागपत्र देकर हरिजनों के उद्धार में जुट गये।

और भी जानिए

- महिलाओं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
- अरुणा आसफ अली 'नमक कानून तोड़ो आन्दोलन', 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेते हुए कई बार जेल गयीं।
- दुर्गाभाभी ने भगतसिंह को लाहौर जेल से छुड़ाने का प्रयास किया।
- कमला देवी चटोपाध्याय ने सन् 1921 में 'असहयोग आन्दोलन' में भाग लिया।
- भीकाजी कामा का कहना था, ''आगे बढ़ो, हम हिन्दुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है।'' इन्होंने अंग्रेजों की परवाह न करते हुए भारत का पहला तिरंगा झण्डा फहराया।

भीकाजी कामा

अभ्यास

(1) प्रथम गोलमेज सम्मेलन हुआ-

(क) सन् 1931 ई0 में (ख) सन् 1930 ई0 में

(ग) सन् 1934 ई0 में (घ) सन् 1929 ई0 में

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न-

(1) गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन किस सन् में शुरू किया ?

(2) 13 अप्रैल 1919 को कौन सी घटना घटी थी ?

(3) 5 मार्च, 1931 ई0 को सरकार और कांग्रेस में कौन सा समझौता हुआ ?

3. लघु उŸारीय प्रश्न-

(1) डाँडी यात्रा किसने और क्यों की थी ?

(2) होमरूल लीग स्थापित करने का क्या उद्देश्य था ?

(3) रवीन्द्र नाथ टैगोर ने अपनी 'सर' की उपाधि क्यों वापस कर दी ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(1) असहयोग आंदोलन के बारे में लिखिए ?

5. प्रोजेक्ट कार्य

1. जिन महापुरुषों ने शांति और अहिंसा के सन्देश दिए, उनके नाम, पता करके लिखिए क्या आपके विचार से उनके द्वारा अपनाया गया अहिंसा का रास्ता सही था। आप कौन सा रास्ता चुनना चाहते और क्यों ?